बेवकूफ़ी का सफ़र

अनूप शुक्ल

बेवकूफ़ी का सफर

अनूप शुक्ल

प्रकाशक: नॉटनल

प्रकाशन: दिसम्बर, 2024

© अनूप शुक्ल

आवरण: सैफ़ असलम खान, शाहजहाँपुर

समर्पण

वाहन निर्माणी, जबलपुर के वरिष्ठ महाप्रबंधक रहे,

टी.टी.एस. कृपा वेंकटेशन जी को,

जिनके साथ काम करना एक ख़ुशनुमा अनुभव रहा,

और,

जो शनिवार को मिलने पर हमेशा पूछते थे,

'शुक्ला, तुम घर नहीं गए'।

अनुक्रम

अपनी बात	5
यात्राओं में बेवकूफ़ियां चंद्रमा की कलाओं की तरह खिलती हैं	7
हिन्दी पेपर प्लीज	13
मन्नत-वन्नत माँग के चलो	20
कोई कनपुरिया ही तो ले जायेगा	26
एयरहोस्टेस से बजट तक	31
ट्रेन का वात्सल्य	35
किरणों के स्पर्श से खिलखिलाती बूंदे	39
प्लेटफार्म की चाय और देश का चरित्र	42
बच्चे सुखी रहें और का चाहिए?	46
बिछुड़ी हुई चप्पल का शोक	47
‘सुख-दुःख सबको मिलते हैं’	50
खेल कभी खत्म नहीं होते	55
'एजेंटी कार्ड' है न	60
चायवाले का नाम कभी चाय नहीं होता	63
ट्रेन के इन्तजार में धान मजदूर	69
सब मिले हुए हैं	73

पैसेंजर के साथ सेल्फी 77

जो फरा सो झरा 78

नदी में नहान 82

एक स्टेटस हवाई जहाज से 89

दिल्ली से कलकत्ता, पहुंच गए अलबत्ता 92

राजधानी से संस्कारधानी 97

चल मेरे घोड़े टिक टिक टिक 99

चाँद भी हमारी तरह अकेला होता है 103

शादी बर्बादी है 104

मान गए यार तुमको 106

अपलम, चपलम… 110

अरे, बड़ी बदनामी हो रही है 116

आत्म-अविश्वास के समय से गुजर रहे हैं हम लोग 121

लगे रोशनी की झड़ी झूम ऐसी 125

आलस्य की संगत हिंसाबाद भी रोकती है 131

रेल की पटरी के किनारे वैलेन्टाइन 137

कानपुर में सीधा कोई नहीं चलता 142

हवाई अड्डे पर ‘वजन जुर्माना’ 146

श्रीनगर एयरपोर्ट से होटल पैसिफ़िक 150

कलकत्ता वाया पटना 153

अपनी बात

पिछले महीने फ़ेसबुक पर लिखी अपनी एक पोस्ट में मैंने अपने अभी तक के लेखन को किताब रूप में लाने की बात लिखी थी।

अपनी योजना पर अमल की पहली कड़ी के रूप में इस किताब का प्रकाशन हो रहा है। इसमें मेरी 2010 से 2024 तक की ट्रेन और हवाई यात्राओं के संस्मरण शामिल हैं। इन यात्रा संस्मरणों में लोगों से बातचीत और मेल-मुलाक़ात के बहाने समाज के विविध वर्गों के लोगों के बारे जानने और उनके बारे में अपनी समझ से लिखने की कोशिश की गयी है।

किताब का नामकरण वरिष्ठ व्यंग्यकार और हमारी किताबों के नाम-पुरोहित आलोक पुराणिक जी ने किया है। पहले व्यंग्य संग्रह 'बेवकूफ़ी का सौंदर्य' की तर्ज़ पर उन्होंने इसका नाम सुझाया – 'बेवकूफ़ी का सफ़र।'

किताब का आवरण चित्र शाहजहाँपुर के साथी सैफ़ असलम खां ने बनाया है।

आज से लगभग दस साल पहले मैंने अपनी पहली किताब 'पुलिया पर दुनिया' का प्रकाशन ईबुक और स्व प्रकाशन (प्रिंट आन डिमांड) व्यवस्था के तहत किया था। इस बीच सात किताबें विभिन्न प्रकाशनों से आयीं। यह किताब का

प्रकाशन फिर से पहली किताब की तर्ज़ पर ईबुक और स्व प्रकाशन के रूप में किया जा रहा है।

अभी तक की जितनी भी लिखाई हमारी हुई है उसके पीछे हमारा हिंदी ब्लॉगिंग से जुड़ना रहा। हिंदी ब्लॉगिंग से परिचय कराने वाले रवि रतलामी जी इस वर्ष हमने विदा हो गए। हिंदी ब्लॉगिंग और नेट पर पर हिंदी को स्थापित करने में रवि रतलामी जी का योगदान अविस्मरणीय है। मेरी यह पहली किताब है जो उनकी अनुपस्थिति में जारी हो रही है। वे जहां भी होंगे इस बात पर ख़ुशी ज़ाहिर कर रहे होंगे। रवि रतलामी जी को विनम्र श्रद्धांजलि ।

आलोक पुराणिक जी किताब का नाम सुझाने और सैफ़ को किताब का कवर पेज बनाने के लिए धन्यवाद, आभार।

इसके अलावा भी किताब के प्रकाशन में और भी तमाम साथियों का योगदान रहा। सबसे बड़ा योगदान पाठकों का रहा है जिन्होंने मेरे लेखन को पढ़ा और सराहा। सभी साथियों, मित्रों का धन्यवाद, आभार।

हमेशा की तरह कहने बहुत कुछ रह गया। जो नहीं कहा उसे कहा हुआ समझा जाए। किताब पर आपकी प्रतिक्रिया का इंतज़ार रहेगा। फ़िलहाल इतना ही।

-अनूप शुक्ल

आर्मापर, कानपुर

05.12.2024

यात्राओं में बेवकूफ़ियां चंद्रमा की कलाओं की तरह खिलती हैं

मोहतरमा फ़ोन पर किसी को बता रहीं थीं- 'कानपुर पिछड़ा शहर है।'

मन तो किया कि उनकी बात का विरोध कर डालें लेकिन वो इतनी तल्लीनता से फ़ोनालाप में जुटीं थीं कि डिस्टर्ब करना उचित न लगा। फिर नहीं ही किया। अच्छा ही किया वर्ना वे किसी को फिर फोन करके बतातीं कि कनपुरिये बदतमीज तो होते ही हैं अंग्रेजी भी गलत बोलते हैं। इस बीच उनका बच्चा मेरे कन्धे से लगकर नींद में खो गया था। अपनी बात खत्म करके वे अपने बच्चे को देखकर मुस्कराईं भी। अगर हम उनसे बहस का उद्घाटनिया फ़ीता काटते तो बच्चे की नींद टूट जाती और हम उनकी मुस्कान-दर्शन से वंचित रह जाते। एक बार फ़िर लगा कि बहस शुरू करने का आलस्य हमेशा ख़ुशनुमा होता है।

अरे, बात बीच से पकड़ ली हमने। शुरू भी तो कर लें। हमको कानपुर से जाना था देहरादून। राजभाषा की मीटिंग में शामिल होने। देहरादून जाने के लिये साधन तय करने में हवाई जहाज ने रेल के ऊपर जिन कारणों से बढ़त हासिल की वे इस तरह से थे:

1. गर्मी के मौसम में देहरादून के लिये रेल में रिजर्वेशन कन्फ़र्मेशन किसी अंतहीन बहस से कोई निष्कर्ष निकलने की आशा तरह मुश्किल था।